International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 27-29

प्रवासी भारतीय साहित्यकार सुषमा बेदी के कथा साहित्य का अध्ययन

प्रणिता लक्ष्मणराव पाटील
शोधछात्र, उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश
लोग प्राचीन काल से अपना देश छोड भ्रमण करते है। कोई काम के लिए, कोई संत अपने विचारों से लोगों को जागृत करने के लिए ऐसे कई कारण होते हैं । आज आधुनिक यूग में यूवा वर्ग दूसरे देश में जाकर वहाँ काम करता है। आज तो भारतीय लोग प्रवासी जीवन जी रहे है। प्रवासी भारतीय लोग कूछ साहित्यिक विधा पर अपनी कलम चला रहे है। उनका साहित्य उनके भोगे हुए या अपने स्वयं के साथ घटित घटनाओं का वर्णन हो सकता है या उनके सामने हुई घटनाओं का। परन्तु प्रवासी भारतीय साहित्य में यथार्थता दिखाई देती है। ऐसी ही एक प्रवासी भारतीय साहित्यकार जो कथा साहित्य में प्रसिध्द है उनकी रचनाओं का थोडाबहूत जो अध्ययन हुआ है और उनके विचारों से जो प्रभाव मिलता है उसका संक्षिप्त रुप आगे स्पष्ट होता है।

मूल शब्द : प्राचीन काल, यूवा वर्ग, प्रवासी जीवन, सुषमा बेदी।

प्रस्तावना

आज के आधुनिक युग में शैक्षणिक क्षेत्र में इतने बदलाव आए हैं कि, मनुष्य कब कहाँ पहुँचे इसका अंदाजा लगाया नहीं जा सकता। आज के युवा वर्ग को विदेश में जाकर काम करनेका मौका मिल रहा है। अपने देश में जन्मे, पले–बढे इन लोगों के लिए परदेस में जाकर वहाँ की सभ्यता और संस्कृति को अपनाना या आत्मसात करना कठिन है। उन्हे अनेक समस्याओंका सामना करना पडता है, परन्तु फिर भी उन लोगों के मन में अपने देश के प्रति प्रेम और लगाव रहता ही है। कुछ लोग अपने मन की बातें शब्दों के जरिए लोगों तक पहुँचाते है। उस यथार्थ को संवेदना को अपनी कलम के माध्यम से अभिव्यक्त करते है।

अपनी भावनाओं को कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त करनेवाले प्रवासी भारतीय साहित्यकार के रुप में श्रीमती सुषमा बेदी प्रसिध्द है। जो पंजाब की है परन्तु अमेरिका के न्युयॉर्क शहर में रहते है। 1985 से 2009 तक वह कोलंबिया युनिवर्सिटी में हिन्दी उर्दू प्रोग्राम के डायरेक्टर के पद पर कार्य करते थे। आज वह कोलंबिया और न्युयार्क युनिवर्सिटी में विजिटिंग प्रोफेसर है।

सुषमा बेदी ने विदेश में रहकर भारतीयों के जीवन को नजदीकी से देखा और जाना है। उन्हे धन की कोई कमी नहीं है क्योंकि वह असंख्य सुविधाओं का उपभोग लेते है। ''उनकी सामाजिक, पारिवारिक, नैतिक स्थिति के बारे में इन्होने जो कुछ भी लिखा है, वह इनका भोगा हुआ यथार्थ है। इनके साहित्य को पढकर यह प्रतीत होता है कि विदेशी सुखमय जीवन जीने के लिए बहूत बडी किंमत देनी पडती है। अपने जीवन की परम्पराओं, नैतिक जीवनमूल्यों एवम् आदर्शों को त्यागकर पराए देश की नैतिकता एवम् जीवनमूल्यों को अपना सकना कठिण है।'' विदेश में रहनेवाले शरीर को आराम दे सकते है। धन–दौलत है, सुख–सुविधाएँ हैं परन्तु उनके मन की अशान्ति और असुरक्षा को वह दूर नहीं कर पाये हैं।

भारतीयों ने विदेश में अपना एक अलग प्रवासी समाज निर्मित कर लिया है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही प्रवास की परम्परा रही है। प्राचीन काल में साधु संत, विद्वान प्रचार, व्यापार और शिक्षा के संचालन के लिए देश–विदेश भ्रमण करते थे और अपने उपदेशों से लोगों तक अपने विचार पहुँचाते थे उसी प्रकार आज का प्रवासी साहित्य है।

सूषमा बेदीने अपने कथा साहित्य में उन प्रवासी समाज की स्थितियों को आधार बनाया है जो प्रवासी भारतीयों की मानसिकता को प्रभावित करती है। प्रवासी का अर्थ समझना भी आवश्यक है। 'प्रवासी' यह शब्द 'प्रवास' से बना है। इसका अर्थ है प्रदेश में वास करना याने प्रवास अर्थात विदेश में रहनेवाले। इसी आधार पर प्रवास में रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। प्रवासी हिन्दी साहित्य में विदेशी परिवेश के अनुभवों से उत्पन्न द्वंद्व और उनसे उत्पन्न प्रतिक्रियाएँ साहित्यसृष्टि के लिए प्रेरणास्त्रोत साबित हुई हैं। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों ने कविता, नाटक, संस्मरण इन विधाओं में भी रचनाओं का निर्माण किया है परन्तु अधिक रुप में कथा साहित्य पर अधिक साहित्य निर्माण किया है। सूषमा बेदी ने भी विभिन्न विधाओं में लेखन किया है परन्तु कथा साहित्य में विशेष ख्याति प्राप्त की है। इनके कथा साहित्य में प्रवासी समाज की समस्याओं का चित्रण किया है। इन्होने बहूतसी समस्याओं पर अपनी दृष्टि रखी हैं। नस्लवाद, भोजन की समस्या, महंगी शिक्षा, निम्न आर्थिकता, असूरक्षा की भावना, नैतिक मूल्यों की टकराहट, स्वार्थपरता, आदर्शहीनता, नारी की दयनीय दिशा, पति–पत्नी में बेगानापन, माता–पिता और बच्चों के बीच बढ रहे पीढिगत अन्तर, धार्मिक अन्धविश्वास और नारी समस्याएँ प्रस्तूत हुई है।

प्रवासी भारतीय नारी सबसे अधिक विरासतहिनता में झूलस रही है। वह विभिन्न मनोविकारों से त्रस्त है। लेखिकाने प्रवास की समस्याओं को व्यक्त करने के लिए वहाँ के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनका साहित्य विदेशी परिवेश के अनुभवों से उत्पन्न द्वद्वों और उनसे उत्पन्न प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्त करने में सफल है क्योंकि अजनबी परिवेश में भारतीय प्रवासियों की मानसिकता जो भिन्न–भिन्न सामाजिक, आर्थिक, भावात्मक और सांस्कृतिक समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली है । सूषमा बेदी ने नारी संबंधि जो चित्रण किया है उसमें पोशाख से लेकर रहन–सहन, रीतिरिवाज, रूढी–परम्परा, आकर्षण आदि का भी चित्रण यहाँ पर हुआ है। आज भी प्रवासी भारतीय स्त्रीयों में कुछ भारतीय है जो उनके पोशाख को सम्मान से धारण करने की चाहत रखती है। कुछ लोगों को परदेशी

पहराव का आकर्षण भी दिखाई देता है। नारी की दयनीय दशा का चित्र इनकी कहानियों में मिलता है परन्तु नारी क्या है यह जानना भी जरूरी है।
नारी रुप की कल्पना न किए जाने पर इश्वर को भी अपूर्ण माना गया है तो कही नारी आदि शक्ति के रुप में पुरुष की अर्धांगिनी तथा जीवन का सृजन और पोषण करनेवाला मातृपक्ष है। जीवन के इसी मधुमय प्रवाह का मुखोपक्षी है। आज की नारी केवल प्रेम बनावटी रोमान्स, सौंदर्य या अर्थ स्वातंत्र्य पर सफल जीवन व्यतीत करना चाहती है। कुछ नारियों पुरुष वर्ग से हटकर किसी के भी नियंत्रण में रहकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है।

''नारी की निन्दा मत करो, नारी है रतन की खान ।
उसी से पैदा हूए, राम, कृष्ण, हनुमान।।''

प्रेम आकार लेकर धरती पर नारी के रुप में अवतीर्ण हुआ । नारी के माध्यम से जननी का रूप नारी जो सृष्टि का केन्द्र है। वह धरिणी है, वह भरिणी है। परिवार के केन्द्र के रूप में संस्कृति के लिए अवलम्बन वृत धारण करती है। नारी के विलक्षण गुणों से प्रभावित होकर प्राचीन समय में नारी को देवी के रूप में सम्मानित करके उसके प्रति श्रध्दा व्यक्त की है। नारी की देवी के रूप में कल्पना करने के कारण ही आर्यों ने अनेक देवियों की प्रतिष्ठा की। विलक्षण सौंदर्य, विलक्षण ज्ञान अथवा विलक्षण शक्ति से सम्पन्न नारी को देवी का अवतार मानकर सरल ह्दय भारतीयोंने संस्कृति के आदियूग में नारी के प्रति अपनी श्रध्दा, भक्ति का परिचय दिया है। सीता और पार्वती के पौराणिक चित्र इसके प्रमाण है।
20 वी सदी में नारी की स्थिति में सुधार दिखाई देता है। नारी में विद्रोह की प्रवृत्ति विकसित हुई है। संगठन मोर्चे निकालकर नारे दिए जा रहे है।

''बंद करो ये अत्याचार, हमें चाहिए बराबर के अधिकार
औरत की जिंदगी फैलती स्याही है
नारी न देवी, न दासी, स्वतन्त्र जीवन की अभिलाषी''

इसलिए नारी आज पुरुष के साथ विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत है। 60 वे दशक से नारी विदेश में जाकर भी काम कर रही है। उस समय जब उसने खूला माहौल, सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता देखी तो उसमें भी आत्मनिर्भरता का भाव जागृत हुआ परन्तु मानवीय रिश्तों में टकरावट शुरू हूई ।
आज प्रवासी भारतीय नारी आर्थिक तौर पर स्वतन्त्र है ओर पाश्चात्य मूल्यों को अपना रही है। परन्तु आज भी नारी शोषण होता है। आज भी उसे अबला ही समझा जाता है, एक जगह हिन्दी साहित्य में देखने को भी मिलता है–

''अबला जीवन हाय तूम्हारी यही कहानी ।
आँचल में दुध और आँखों में पानी ।''

सुषमा बेदी के कथा साहित्य में प्रवासी भारतीय नारी के विभिन्न रूप दिखाई देते है। वह शिक्षित होने के बावजूद भी वह अन्याय का सामना नहीं कर पाती वह अबला बनकर ही जीवन जी रही है। आज भी नारी का शारीरिक और मानसिक शोषण होता है। 'हवन' उपन्यास में अनूज तनिमा को माध्यम बनाकर अमेरिका पहूँचता है। वहाँ जाकर वह तनिमा को पत्नी का दर्जा नहीं देता और अन्य लडकीयों से रिश्ते बनाता है। जब तनिमा को इस बात का पता चलता है उसे यह बात सहन नहीं होती और अनूज से बिना पूछे अबॉर्शन करवा लेती है। जब अनूज को यह बात पता चलती है तो वह उससे समज से बात नहीं करता उस पर हात उठाता है और चिल्लाता है। उसे समझने की या हमदर्दी भी अनूज के स्वभाव में नहीं थी। वह उसी अपनी प्रवृत्ति पर आता है।
'चिडिया और चील' इस कहानीसंग्रह की 'तीसरी दुनिया का मसीह' इस कहानी की नायिका शादी के बाद विदेश पहुँचती है और जल्दी ही उसे इस बात का एहसास होता है कि उसके साथ धोका हुआ है। किन्तु भारत में रह रहे अपने माता–पिता को खत लिखती है, ''मैं ठीक हूँ, मजे में हूँ, मेरी फिक्र मत किजिएगा ।'' क्योंकि उसके माता–पिता मजदूर हैं और अपने बेटी को तकलिफ में है सुनने के बाद वह परेशान होंगे । इस तरह की मानसिक चोट भी देनेवाले लोग थे उसका यथार्थ चित्रण इनके कथा साहित्य में हुआ है।
पत्नी के रूप में तो उसकी दयनीय दशा का चित्रण सूषमा बेदी के कथा साहित्य में मिलता है परन्तु बेटी का भी शोषण किया जाता है यह भी दिखाई देता है। भारतीय समाज में बेटी को फूलों की तरह रखा जाता था परन्तु आज के यूग में वह खूली साँस लेना चाहती है। नारी जब जन्म लेती है तो पिता पर आश्रित, बडी होती है तो भाई पर आश्रित, शादी होती है तो पति पर आश्रित और बूढी होती है तो बेटे पर आश्रित रहती है। उसे खूली साँस लेने के लिए बचपन से बूढेपन तक कोई जगह ही नहीं देता।
'हवन' उपन्यास में राधिका ने अपना एक अलग संसार संजो रखा है। जिसमें उसकी अपनी संस्कृति, अपने मूल्य और अपनी परम्पराएँ है। आज समाज में पुरूष अपनी बेटी को अपने पर आश्रित रखना चाहता है। अमेरिका में जन्मी राधिका पूरी तरह से विदेशी बनने के सपने देखती है। जैसे पिता को इस बात का पता चलता है तो उसे समझाने के बजाए उस पर हाथ उठाते है। परिवेश बदल जाए परन्तु भारतीय मानसिकता नहीं बदल पाती । शादी के बारे में भी विदेश में रहनेवाले भारतीय लोगों की सोच वहीं है जो सौ साल पहले थी।
सूषमा बेदी के कथा साहित्य में स्पष्ट होती बात यह है कि प्रवासी भारतीय अपनी बेटियों को एक खास तरह प्रवासी साँचे में ढालने की कोशिश करते है। बेटीयाँ अपना मन मारकर माता–पिता के साथ रहती है इसलिए उसे संस्कारित कहते है।
प्रियसी के रूप में भी स्त्री की दशा का चित्र सूषमा बेदी के कथा साहित्य में दिखाई देता है। समाज मान्यता न होने के बावजूद प्रेयसी के संबंध रखना चाहती है और वह उसे निभाना चाहती है। 'हवन' इस उपन्यास में जुनेजा नाम का जो डॉक्टर है वह अपने प्रेयसी गुड्डो और पत्नी दोनों को खोना नहीं चाहता। वह अपने से दोनों को दूर जाने नहीं देता। जब गुड्डो उससे पूछती है की कोई अपराध बोध है या नहीं तो वह जबाब देता है–''अपराध बोध नहीं। ये दोनों रिश्ते अलग–अलग है। मेरे लिए दोने अहम् है। तुम रमा की जगह नहीं ले रही न रमा तुम्हारी जगह ले सकती है। तुम मेरी दोस्त हो... दोस्ती की नींव भी प्यार होता है। उस नाते से तुम इसे प्यार भी कह सकती हो।''
विदेश में अकेले प्रवास करना नारी के लिए बहुत कठिण रहता है। उसे अकेला देखकर हर कोई उसका फायदा उठाना चाहता है। ऐसी परिस्थितियों में वह बहूत बार धोका खाती है उसी प्रकार जुनेजो स्त्री शोषण करता है याने उसने बहूतसी प्रवासी भारतीय नारीयों का फायदा उठाया था। यह उसे बाद में पता चलता है। क्योंकि पहले भी वह पती मरने के बाद जब भारत में रहती थी तो वहाँ पर भी वकिलसाहब उसका इस्तेमाल प्यार के नाम पर करते थे। यह नारी शोषण प्यार के नाम पर होने की प्रवृत्ति की घीन नारी के व्यवहार में देखने को मिलती है। सच्चे प्रेम की तलाश उसे नरक बना रही है।

सूषमा बेदी के कथासाहित्य में पुत्रवधू का भी शोषण का चित्र देखने को मिलता है। नारी को किसी भी रूप में हो प्यार के लिए तरसना ही पडता है। वह बेटी, बहन, पत्नी, माता, प्रियसी, बहू या सभी रिश्तों को निभाती है और वह यह भी सोचती है कि उसे इन सभी रुपों में मान मिले, प्रेम मिले, हक्क और अधिकार मिलते परन्तु ऐसा उसे न भारत में मिला न प्रवासी भारतीय लोगों में। वह अपनी इच्छाओं को दबाकर शोषण के कारण, अपने जीवन को विकसित करने के लिए विरोध कर रही है। वह अब अपने बारे में सोच रही है। अब ऐसा लगता है कि वह दिन दूर न होगा जिस दिन वह पुरुष के इन ढकसलों का प्रतिउत्तर देना शुरु करेगी और वह अपने अधिकारों को पूरी तरह हासिल करेगी।

संदर्भ

1. सुषमा बेदी की दस कहानियाँ
2. सुषमा बेदी
3. चिडिया और चिलः कहानीसंग्रह, सुषमा बेदी
4. हवन – सुषमा बेदी